International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 45-46

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिकता बोध

Birmati
Extension Lecturer, Govt. College Julana, Jind, Haryana, India.

सारांश
आधुनिक बोध जीवन के जटिल यथार्थ के अनेक स्तरों भाव स्थितियों, मनोदिशाओं और अनुभव खण्डों की एक समवेत संज्ञा हैं, जो गत्यात्मक और परिवर्तनशील है। यह एक तरह की संश्लिष्ट विचार पद्वति है। जिसका विकास कुछ अस्तित्ववादी दार्शनिकों और साहित्यकारों ने समकालीन विचार पद्वति के रूप में किया हैं। आधुनिकता ऐसी जीवन दृष्टि हैं जिसे हम जीवन साधन के रूप में प्रयोग करते हैं। आधुनिकता वर्तमान को सजग रूप से भोगने और उस भोग से नए सन्दर्भ में देखने और जीने की क्षमता है आज का व्यक्ति अपने आस–पास के अपने प्रश्नो से टकराता है, टूटता और निर्वासित हो रहा है क्योंकि वह वैज्ञानिक उपलब्धियों को जाने अनजाने स्वीकार कर रहा हैं और वैज्ञानिक विचारधारा ही आधुनिकता की धारणा बन गई हैं। अतः आधुनिकता ने वार्तालाप के दायरे को नितान्त सीमित और सकुचित कर दिया है। व्यक्ति अकेलपन से निकलने और परिवेश से जुडने के लिए छटपटा रहा है। वह जीने के लिए नये सम्बन्धों को नयी मान्यताओं की तलाश करता हैं ताकि अपनी खोई हुई दिशा को प्राप्त कर सके और जीवन को नये सम्बन्धों एवं सन्दर्भो से जोड सके। निर्मल वर्मा का कथा संसार इसी आधुनिकता–बोध की सशक्त अभिव्यक्ति है।

प्रस्तावना
आधुनिक–बोध को, उसकी चीख और दैर को निर्मल वर्मा ने व्यापक फलक पर चित्रित किया है। निर्मल वर्मा का 'वे दिन' उपन्यास तो पूर्णतः मनुष्य के अकेलपन और उसे बाटने की नाकाम कोशिशों पर लिखा गया संवेदनशील उपन्यास हैं। इस अकेलेपन का एक अन्य रू‍प परिन्दे कहानी की लतिका में मिलता है – ''जब लड़कियों की आखिरी बस चली जाती है तब मन उचाट सा हो जाता है – खाली कारीडोर मे धुमती हुई वह कभी इस कमरे में जाती है और कभी उसमें वह नहीं जान पाती कि अपने से क्या कर– दिल कही भी नहीं टिक पाता, हमेशा भटका–भटका सा रहता हैं''
'लन्दन की एक रात' में वे लिखते हैं –
''शायद इससे भयंकर और कोई चीज नहीं, जब दो व्यक्ति एक संग होते हुए भी यह अनुभव कर लें कि उनमें से कोई भी एक–दूसरे को नहीं बचा सकता..... ।''
'पिक्चर पोस्टकार्ड का परेश अपनी प्रेमिका नीलू के बारे में सोचता है–''उसने मेरी और देखा, क्षण–भर अपलक, मानो मैं कोई अजनबी हूँ जैसे वह बहु दूर की निगाह हैं, जो मुझे बहुत पास से देख रही है।
कुछ ऐसी ही अनुभूति का अक्स नर्वस कहानी में मिलता है– '' जब कभीहम दोनो अकेले होते हैं जब कभी भी हम दोनो एक–दूसरे के संग होते हुए भी अपने–अपने में अकेले हो जाते हैं और उसे लगता हैं कि उसकी बात से मुझे तकलीफ होगी तो वह मुझे इसी नाम से बुलाती हैं,''
''बीच बहस में'' का केन्द्रीय पात्र अपनी मॉ के के बारे में सोचता हैं– ''मॉ कभी यह भी भूल जाती कि बरसों पहले भीतर का मरीज उनका पति रह चुका हैं,''
'माया दर्पण की तरन सोचती हैं,'' वह अकेली रहेगी, किन्तु बाबू की छाया से बंधी हुई। और बाबू की छाया से बंधी हुई। और बाबू का अकेलापन हमेशा, जिन्दगीभर उससे जुडकर रहेगा''
निर्मल वर्मा के पूरे कथालेखन मे निहित पात्र ऐसे हैं जो धूम–फिरकर बार–बार आते हैं, बिल्कुल उस प्राणी की तरह जिसकी कोई आत्मीय चीज उससे अलग हो गई है और वह उस अलगाव का आदि नहीं हो पाया हैं और अपनी तलाश को जारी रखे हुए वह इस घोर से उस छोर तक चक्कर लगा रहा है। ये सारे पात्र जो धुमक्कडी करते फिर रहे हैं,अपने भीतर भुतेला जंगल लिये हुए हैं, अकेलेपन का '' उनका यह अकेलापन अनका अपना चुना हुआ हैं। तकलीफ उदासी अजनबीपन में वे किसी को भागीदार भी नहीं अनाते।
निर्मल वर्मा की कहानियों में अकेलेपन या अलगाव को एक केन्द्रीय थीम की तरह देखा जाना इसलिए उसे अधूरा देखना हैं क्योंकि ये कहानिया अकेलपन के आनन्द की नहीं, बल्कि वेदना की कहानिया है, अकेलपन से मुक्ति के लिए छटपटाहट की कहानियां हैं। आशुतोष मिश्र के अनुसार, '' हजार सूत्रों और हजार सम्भावनाओं के बीच निर्मल वर्मा के लेखन का आन्तरिक सूत्र अकेलेपन से मुक्ति ही कहा जा सकता हैं। कहानियों की अन्त वस्तु यह है ि कवे बार–बार मनुष्य को उसके अकेलपन के धेरे से बाहर निकालती हैं, वह बार–बार उसमें धुस जाने को जैसे विवश है। इन कहानियों का अकेलापन आरोपित नहीं बल्कि अस्तित्वगत हैं, उसी प्रकार उससे मुक्ति को छटपटाहट भी किसी कृत्रिम आशावाद की ओर नहीं ले जाति बल्कि इस छटपटाहट में ही मानवीय अस्तित्व की सार्थकता को रेखांकित करती हैं। लेखक ने अपनी अने कहानियों और उपन्यासों में जीवन की विसंगति और व्यर्थता के चित्र उकेरे हैं। उन्होने प्रौढ़ और बूढे व्यक्तियों की उस अवस्था का उद्‌धाटन किया हैं, जब जिन्दगी उनके हाथो से फिसल चुकी होती हैं। युवा किशोर रोमानि एवं यौन धरातलु पर विसंगति का शिकार हैं तथा कुछ प्रवासी यहा–वहा सर्वत्र बेमेले है। बेकार पात्र भी समाज में कही संगति नहीं पाते हैं।
'डेढ़ इंच ऊपर का पेंशनयाफता बूढा विगत पन्द्रह वर्षो से जीवनगत विसंगति और व्यर्थताबोध में जी रहा है– '' मेरी उम्र में नींद आसानी से नहीं आती। नींद के लिए छटाक भर लापरवाहि चाहिए, आधा छटॉक थकान, अगर आपके पास दोनों चीजे नहीं हैं, तो आप उसका मुआवजा डेढ छटांक बीयर पीकर कर सकते है, इसलिए वह बीयर में जीवन को वयर्थता को डुबोना चाहता है। भले ही निर्मल वर्मा के कुछ पात्र बीयर, मृत्युकामना एवं अनैतिकता द्वारा इस स्थिति को भूलने का यत्न करे, किन्तु इससे छुटकारा पाने का कोई मार्ग नहीं हैं। लेखक की अनेक कहानियों में शून्यताबोध के अनेक पहलू मिलते हैं। माया का मर्म के नायक की स्मृतियां सूखे पत्तो सी झरती जा रही हैं, यह उसके अतीत की शून्यता हैं। बर्तमान में वह बेकारी के उदास और लम्बे अरसे से गुजर रहा है। यही वर्तमान की शून्यता उसके भविष्य को भी शून्य कर रही है।
'जलती झाडी का बूढा व्यक्ति शून्यताबोध से ग्रस्त है। कहानी का बूढा हर रोज निश्चित जगह पर आकर बैठता हैं, शायद उसे किसी

चीज की तलाश है, पर हर रोज वह निराश होकर लौटता हैं वह बूढा जहां बैठता है, वहॉ दो लड़के उसे राज देखते हैं, उसी निराश मुद्रा में वहां एक अन्य लड़का और लड़की भोग के लिए आते हैं। ये सारे एक ही जिन्दगी के अलग–अलग पहलू हैं। ये सब लोग कही भी जिन्दगी को चिपके रहने का आनन्द नहीं ले सकते और उन्हे शून्यता का अहसास होता है। लन्दन की एक रात शून्यता बोध से ग्रस्त तीन विभिन्न देशें के युवकों की कहानी है। वे स्वयं को महानगरीय परिवेश से जोड़ नहीं पा रहे हैं। तीनो युवक बेरोजगार हैं और तीनों लन्दन की जगमगाती रातों मं खो गए हैं किन्तु '' तीनों एक साथ रहते हुए भी एक–दूसरे से कटे हुए हैं और निरन्तर अकेले और रिक्त महसूस कर रहे है।

लेखक के उपन्यासों और कहानियां के पात्र अपने अस्तित्व के प्रति भी बेहद सतर्क हैं। ये पात्र अपने होने का अर्थ खोजते हैं, अस्तित्व की सार्थकता की तलाश में इधर उधर भटकते हैं। इस कारण वे निरन्तर जटिल से जटिलतर होते जा रहे जीवन–सन्दर्भो के बीच अपनी निरर्थकता का अनुभव करते है। यह निरर्थकता–बोध उस समय और अधिक गहरा हो जाता हैं जब कही कोई परिवर्तन की सम्भावना भी दिखाई नहीं देती हो। एक चिथडा सुख की बिट्टी अपने अस्तित्व के प्रति सचेत हैं और अपनी पहचान बनाने या अस्तित्व रक्षण के लिए अपना घर छोडकर दिल्ली आती हैं और अपने कजिन के साथ बरसति में रहकर अपने अन्दर की लड़की को खोजने का प्रयास करती है।

निष्कर्षतः निर्मल वर्मा का कथा जगत आधुनिकता–बोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। यह आधुनिकता–बोध की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। यह आधुनिकता–बोध कहे अकेलपन अजनबोपन और अलगाव–बोध के रू‍प में अभिव्यक्त हुआ हैं तो कही संत्रास के रू‍प में कही विसंगति और व्यर्थताबोध के रूप में तो कही शून्यताबोध के रूप में और कहीं–कहीं अस्तित्व बोध के रू‍प में भी। उन्होने आधुनिकता–बोध के रूप में भी। उन्होने आधुनिकता–बोध के रूप में भी। उन्होने आधुनिकता बोध को व्यापक और समग्र रूप में चित्रित किया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. निर्मल वर्मा, परिन्दे, पृष्ठ 177
2. निर्मल वर्मा, जलती झाडी, पृष्ठ 140
3. निर्मल वर्मा, परिन्दे, पृष्ठ 86
4. निर्मल वर्मा, बलती झाडी, पृष्ठ 16
5. निर्मल वर्मा, बीच बहस में, पृष्ठ 98
6. निर्मल वर्मा, जलती झाडी, पृष्ठ 42
7. वन्दना कंगरानी, निर्मल वर्मा के स्त्री विमर्श, पृष्ठ 204
8. आशुतोष मिश्र, पृष्ठ 48
9. निर्मल वर्मा, पिछली गर्मियों में, पृष्ठ 41
10. डॉ साधना शाह, नयी कहानी में आधुनिकता–बोध पृष्ठ 102